विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -31-08-2020**

विषय -हिन्दी (व्याकरण) **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -10- क्रिया के बारे में अध्ययन करेंगे।

क्रिया' का अर्थ होता है-करना। प्रत्येक भाषा के वाक्य में क्रिया का बहुत महत्त्व होता है। प्रत्येक वाक्य क्रिया से पूरा होता है। क्रिया किसी कार्य के करने या होने को दर्शाती है। क्रिया को करने वाला कर्ता कहलाता है।

जिन शब्दों से किसी काम के करने या होने का पता चले, वे शब्द क्रिया कहलाते हैं; जैसे-पढ़ना, खेलना, खाना, सोना आदि।

धातु – क्रिया का मूल रूप धातु' कहलाता है। इनके साथ कुछ जोड़कर क्रिया के सामान्य रूप बनते हैं। जैसे-हँस, बोल, पढ़-हँसना, बोलना, पढ़ना।
मूल धातु में 'ना' प्रत्यय लगाने से क्रि या का सामान्य रूप बनता है।

क्रिया के भेद

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं।

- सकर्मक क्रिया
- अकर्मक क्रिया।

वाक्य में क्रिया के होने के समय कर्ता का प्रभाव अथवा फल जिस व्यक्ति अथवा वस्तु पर पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं, जैसे

नेहा(कर्ता) दूध पी(कर्म) रही है।(क्रिया)

1. सकर्मक क्रिया – जिन क्रियाओं के व्यापार का फल कर्म पर पड़ता है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे-लड़की पत्र लिख रही है।
सकर्मक क्रियाओं के दो भेद हैं

- एककर्मक क्रिया
- विकर्मक क्रिया

(i) एककर्मक क्रिया – जिन सकर्मक क्रियाओं में केवल एक ही कर्म होता है, वे एककर्मक सकर्मक क्रिया कहलाती है; जैसे-नेहा झाड़ू लगा रही है।

गृहकार्य

निम्नलिखित वाक्यों में से कर्म छाँटकर लिखिए -

कर्म

(क) रंजीत ने मुझे अलबम दिखाया। **----------**

(ख)बच्चों ने सुंदर गीत गया। **----------**

(ग) मैंने अपना गृहकार्य पूरा कर लिया है। **----------**

(घ) दादी बच्चों को कहानी सुनाती है। **----------**